# झारखण्ड में शिक्षा का विकास

**डॉ. रंजनी कुमारी***

**सार-सारांश**

झारखण्ड की शिक्षा व्यवस्था की जब भी हम बात करते हैं तो वह भारत की शिक्षा व्यवस्था के संदर्भ में ही कर सकते हैं। वैदिक काल में झारखण्ड के शिक्षा व्यवस्था के संदर्भ में अभी तक कोई ठोस प्रमाण नहीं मिले हैं। उत्तर वैदिक काल में ब्राह्मण ग्रन्थ आरणक्य और उपनिषद ग्रन्थों के माध्यम से झारखण्ड की भौगोलिक एवं राजनैतिक व्यवस्था के बारे में प्रमाण मिले हैं। उत्तर वैदिक काल की अवधि जो 1000-600BC तक मानी जाती है, उस समय यहाँ बौद्ध एवं जैन धर्म को मानने वाले लोग थे। बिरहोर, असूर यहाँ के मूल निवासी थे, उन्हें लोहा, कॉपर का ज्ञान था। मानभूम (वर्तमान धनबाद) जैन धर्म का मुख्य केन्द्र था। वहाँ से जैन धर्म की मूर्तियाँ प्राप्त हुई है। उसके बाद पलामू, धनबाद, हजारीबाग, चतरा यानी करीब पुरा झाखण्ड बौद्ध धर्म का केन्द्र बन गया था। ऐसा माना जाता है कि उत्तर वैदिक काल में पहली बार झारखण्ड में राजा दक्ष ने मंदिरों का निर्माण करवाना प्रारम्भ करवाया था। अभी तक यहाँ राज्य जैसी कोई व्यवस्था नहीं थी, तो शिक्षा की कल्पना नहीं की जा सकती। जैन एवं बौद्ध धर्म के बाद यहाँ मुण्डाओं का आगमन हुआ, जिसका पहला राजा रीता मुण्डा को कहा जाता है, जिससे सुतिया मुण्डा को अपना उत्तराधिकारी बनाया था। सुतिया मुण्डा ने सबसे पहले राज्य व्यवस्था यहाँ शुरू की। इसलिए इस क्षेत्र को 'सुतिया नागखण्ड' भी कहा जाता है, जिससे कुल 9 गढ, 21 परगना और उसमें 151 गाँव थे। ऐसा माना जाता है कि मुण्डा साम्राज्य झारखण्ड में 200BC–84AD तक रहा, तब तक यहाँ शिक्षा व्यवस्था की, कोई ठोस व्यवस्था नहीं थी। जरासंघ के समय (जो मगध का शासक था) राज्य विद्रोह करने वाले लोगों को मारा नहीं जाता था बल्कि उन्हें झारखण्ड के जंगलों में छोड़ दिया जाता था। जब बौद्ध धर्म अपनी परकष्ठा पर था, तक्षशिक्षा, नालंदा, विक्रमशीला, वल्ल भी जैसे बड़े-बड़े विश्वविद्यालय भारत में थे। विदेशियों के विद्या का मुख्य केन्द्र था, उस समय भी यह क्षेत्र उपेक्षित रहा, शिक्षा की दृष्टि से। मुस्लिम काल में यहाँ जो भी बौद्ध बिहार एवं मठ बने थे, उसे भी पूरी तरह नष्ट कर दिया गया। यहाँ शिक्षा का व्यवस्थित स्वरूप अंग्रेजों के आगमन के बाद ही दिखाई देता है। शिक्षा के प्रचार-प्रसार में इसाई मिशनरियों का प्रमुख योगदान माना जाता है। लेकिन इन इसाई मिशनरियों का यहाँ आने का मुख्य उद्देश्य इसाई धर्म का प्रचार-प्रसार करना था।

*असिस्टेंट प्रोफेसर, डोरंडा कॉलेज राँची विष्ठवविद्यालय, राँची।